VISION IAS

www.visionias.in

ESSAY

Name of Candidate	Prachi Chauhan		Test Code	2575
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1017622	
Centre	online	Date	17082024	

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।
2. Word limit, as specified, should be adhered to.
   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।
3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   प्रष्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवष्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।
2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.
   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।
3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.
   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।
4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।
5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.
   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।
6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.
   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Structure and Flow
3. Dimensional Coverage
4. Language Competence
5. Length of Essays
6. Creativity Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

VisionIAS

For one-to-one mentoring session on this copy, call us at 7042691891 or send an email to appointment@visionias.in

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

खण्ड–A / SECTION–A

भ्रम रचनात्मकता के द्वार पर स्वागत चटाई है।

बात छठवी शताब्दी ई की है, उज्जैन नगर मे एक आम आदमी कल्लू जिसे अपनी पत्नि से अधिक ही स्नेह था, एक बार अपनी पत्नि के अपने ससुराल चले जाने से बडे व्याकुल था।

कल्लू ने आधी रात ही घर से निकल अपनी पत्नि के पास जाने का विचार बदले लगा, रात काली अंधेरी, अधिक बरसात के साथ पानी कल्लू के मुह तक लग रहा था, बाढ के बहते पानी मे बहते आते मुर्दे पर बैठ कल्लू आगे बढा, पत्नि के घर के यहाँ पहुचकर, रस्सी से लटकते साँप को पकड कल्लू घर पहुचे।

जब कल्लू की पत्नि ने कल्लू की यह दशा देखी तो वह अतिक्रोधित हो कहने लगी, मुझसे इतना अधिक जो मोह से तुम भ्रम मे डूबे हुये हो उतना ही मोह अपने राम से किया होता तो तुम आज विद्वान होते

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कल्लू के भ्रम की दीवारें यह सुनकर मानो दरकने लगी, और रचनात्मकता का अंकुरण उस भ्रम की मिट्टी से हुआ, वह मंद मति कल्लू आगे चलकर अभिज्ञान शकुन्तलम जैसे महान नाटक लिखने वाला कवि कालिदास बना।

तब क्या भ्रम किसी वस्तु में अत्यधिक आसक्ति ही है? अथवा इससे अधिक अर्थात भ्रम के रूप भिन्न भिन्न भी हो सकते है, जब जीवन में मार्ग ही स्पष्ट न हो तो वह भी भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सकती है. जैसे डॉ एपीजे कलाम साहब को पायलट बनने का सपने लेकर आगे बढ़े, असफलता ने उन्हें भ्रम की स्थिति में डाल दिया।

भ्रम का एक अलग रूप किसी वस्तु, प्रसंग की गलत व्याख्या से भी तो हो सकता है, भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जैसे पुर्नजागरण काल से पूरा यूरोप चर्च की इस गलत व्याख्या को ही तो मानता रहा की पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केन्द्र में है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यह भी भ्रम की एक विकट स्थिति ही तो रही।

इसी प्रकार भ्रम का एक रूप हिटलर द्वारा अपनी आत्मकथा मीनकॉफ में उल्लेखित किया गया वह भी हो सकता है की "किसी झूठ को इतनी बार बोलो की लोगो को भ्रम हो जाए की वही सत्य है।"

जैसा हिटलर द्वारा यहुदियो के विरुद्ध किया भी गया, उसी प्रकार आध्यात्मिक दृष्टिकोण जहाँ इस संसार को ही भ्रम की संज्ञा देता है, जो परमतत्व ईश्वर को सत्य व संसार का भौतिक माया बताता है, जैसे शंकराचार्य का अद्वैतवादी दर्शन संसार को भ्रम (माया) बताता है।

तो वही कबीर के दोहे भी परमतत्व की पहचान की अक्षमता को भ्रम की स्थिति बताते है जैसे

"पोथी पढ़ पढ़ जग मरा पण्डित भया न कोय"

यह भी भ्रम की स्थिति दर्शाता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

उसी प्रकार गीता मे अर्जुन अपने भ्रम के निवारण की प्रार्थना करते है,

तो अब इतना अवश्य समझा जा सकता है की भ्रम की स्थितियाँ अलग अलग है, कही यह दो विकल्प के मध्य दुविधा से उत्पन्न है तो कही दार्शनिक चिंतक भ्रम वश अज्ञानता की बात कर रहे तो कही राजनेता भ्रम का उपयोग अपनी स्थिति अनुसार कर रहे है,

तब प्रश्न यह उठता है की रचनात्मकता क्या है? क्या यह भ्रम का निवारण है? क्या यह भ्रम ही है तो रचनात्मकता को अंकुरण करता है?

इन सभी प्रश्नो के ईर्द गिर्द ही हम अपनी चर्चा को आगे बढ़ा सकते है, यदि सर्वप्रथम रचनात्मकता पर चर्चा करे तो सामान्य शब्दो मे रचनात्मकता कुछ नया सोचने। भीड़ से हटकर विचार करने की क्षमता है।

जैसे जब पृथ्वी पर सेब गिरा तो यह क्यो गिरा? यह सोच पाना ही रचनात्मकता है, इसलिए हम आज भी आरपक-भुगत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को उनके योगदान के लिये याद करते है, अब यदि हम रचनात्मकता पर स्पष्ट है तो यह प्रश्न उठता है, की क्या रचनात्मकता भ्रम का अंकुरण ही है? अर्थात जब भ्रम उत्पन्न होता है तब ही व्यक्ति रचनात्मक बन पाता है, जैसा हमारी चर्चा का शीर्षक है,

यदि विचार करे तो यह सत्य भी प्रतीत होता है, न्यूटन के उदाहरण से ही समझे अगर तो न्यूटन के मन मे भी तो पहले भ्रम ही उत्पन्न हो गया होगा, उसके निवारण उपचार के रूप मे उसने रचनात्मकता को अपनाया होगा।

प्रसिद्ध रूसी विद्वान दोस्तोवस्की ने भी अपनी पुस्तक द डार्मोजोव ने भी अपने विवरण मे लिखा है. कैसे भ्रम की स्थिति, रचनात्मकता को उत्पन्न करते है, नया सोचने पर विवश करती है।

जब भ्रमवश चर्च द्वारा पृथ्वी केन्द्रित ब्रह्माण्ड की संकल्पना रखी तब ही तो व्यालिनी ब्रुनों, कोपरनिकस वैज्ञानिक यह सोचने

VisionIAS

पर विवश हुये थी यह सत्य है अथवा नहीं?

इसी प्रकार का विवरण विक्टर फ्रेंकेल जिन्होंने 10 वर्ष अपने जीवन के नाजी कैम्प में बिताये अपनी पुस्तक मैन सर्च फॉर मिनिंग में बताते हैं, की कैसे नाजी कैम्प में लोग हिटलर के फैलाये झूठ के विरुद्ध अपनी रचनात्मक शक्ति का प्रयोग कर उसे असत्य सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे।

भ्रम में फंसे अर्जुन के लिए गीता का ज्ञान जिसने "कर्मण्ये वाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचनः" जैसे महान विचारों को विश्व व मनुष्यि मानव जाति के समक्ष रखा।

अगर इसे वर्तमान के संदर्भ में भी जोड़कर देखें तो जलवायु परिवर्तन जैसी विकट वैश्विक समस्या ने जहाँ भविष्य के प्रति अनिश्चितताओं को बढ़ाया है, साथ ही IPCC की छठवीं आकलन जैसे दस्तावेज जहाँ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मानवजाति को अधिक भयावह भविष्य की परिकल्पना करा रहे, जहाँ मान्यताओं मे भय अवसाद भ्रम व्याप्त है,

मनुष्य को नये समाधन खोजने की रचनात्मकता की ओर भी तो बढ़ा रहे है, जैसे मिशन लाइफ (लाइफ स्टायल फॉर एन्वायरमेन्ट) का विचार हो अथवा ब्रंटलैण्ड आयोग की "अवर कॉमन फ्यूचर" की संकल्पना हो अथवा क्लाइमेट इंजीनियरिंग जैसे रचनात्मक समाधान, इनकी उत्पत्ति तो भविष्य के प्रति बढ़ते भ्रम की स्थिति से ही हुयी है।

ऐसी ही बात प्रसिद्ध विद्वान कार्ल जुंग अपनी पुस्तक Undiscover self मे करते है, की जब आदिम मनुष्य ने प्रथम बार अग्नि जलायी होगी तो यह उसने भ्रमवश अचानक किया होगा।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परन्तु जब जैसे जैसे उसने अपनी भ्रम की स्थिति से निकलकर सोचने का प्रयास किया होगा तो उसकी रचनात्मकता ने आग के बहुत से फायदे खोज लिये होंगे जैसे मांस पकाना जानवरों को दूर भगाना।

तो अबतक के विश्लेषण से यह तथ्य तो स्पष्ट है, की भ्रम रचनात्मकता का प्रथम बिन्दु है, जब व्यक्ति में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है तो वह अपनी समस्या समाधान के लिये रचनात्मकता, नई, नवाचार का उपयोग कर समाधान, भ्रम के निवारण का प्रयास करता है।

तो अब क्या हम इस विषय के द्वितीय पक्ष अर्थात विरोधी पक्ष को भी देख सकते है, अर्थात भ्रम की स्थिति से रचनात्मक स्थिति का अंकुरण न हो अपितु यह रचनात्मकता को समाप्त ही कर दे, क्या ऐसा संभव है?

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें।)

यदि गहन अवलोकन करे तो यह स्थिति संभव है उदाहरण के लिए यदि ऐतिहासिक उदाहरण देखे तो इटली का फांसीवाद को कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है, जहाँ मुसोलिनी ने आमजन को इस प्रकार भ्रमित किया की वे अपनी बुद्धि रचनात्मकता को हीन समझने लगे।

फांसीवादी दर्शन कुछ इस प्रकार के विचार ही सामने रखता है जैसे "अनुशासन आज्ञापालन" अन्धराष्ट्रवाद का ऐसा भ्रम उत्पन्न करो की व्यक्ति रचनात्मकता कार्य ही न करे।

इसी प्रकार का विवरण प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जोसेफ मर्फी अपनी पुस्तक "अवचेतन मन की शक्ति" मे भी देते है, की किस प्रकार कई व्यक्ति अपने जीवन मे कई घटना जैसे प्रेमसम्बन्ध मे धोखा, अथवा बिजनेस लास के पश्चात अपने स्वयं की भ्रम की दुनिया मे रहते है,

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वे किसी पर विश्वास नहीं करते अथवा संसार को भ्रमवश दुनिया के रूप मे देखते है। ये लोग अपनी भ्रमक दुनिया के कारण अपनी तर्क रचनात्मकता की क्षमता से मुंह मोड़ लेते है

अब यदि यह पक्ष भी उतना ही सत्य है, जितना अपनी चर्चा का पहला पक्ष तो यह अवश्य कहा जाता है की 'भ्रम रचनात्मकता के द्वार पर स्वागत की चटाई है,,

साथ ही इसका द्वितीय पक्ष भी उतना ही सत्य है, मनुष्य को चाहिए के अपने जीवन मे उत्पन्न शंकाओं, भ्रम को अपने रचनात्मकता व तर्क की ओर ले जा कर उन समस्याओं का समाधान करे जो उसकी समक्ष भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर रही है,

न की द्वितीय पक्ष अनुसार भ्रम से अपने जीवन समाज देश को भ्रमित

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बड़े जैसा इतिहास में भरे पड़े उदाहरणों से देखने को भी मिलता है।

अतः निष्कर्षतः भ्रम से रचनात्मकता तक सफर मनुष्य से मनुष्य से मानव बनने तक सफर ही तो है, जो अपने जीवन में उत्पन्न भ्रमों को रचनात्मकता से समाधान कर सच्ची महानता प्राप्त करता है उदा. महात्मा गांधी, आइजक न्यूटन नेल्सन मण्डेला इत्यादि।

" भ्रम से जिज्ञासा है।
जिज्ञासा से रचनात्मकता है।
रचनात्मकता से समृद्धि है।
समृद्धि से मानव सभ्यता का विकास है। "

VisionIAS

"किसी समाज की अन्तरात्मा का इससे अच्छा वर्णन कुछ नहीं हो सकता, की वह अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करता है।"

कक्षा 5 की छात्रा राधिका आज स्कूल से शीघ्र घर आ गयी क्योंकी कल दिपावली है, वह भी उत्सुकता से अपने पिताजी का इंतजार कर रही है, की नये खिलौने उसके और उसके भाई के लिये आ रहे है, अब जब पिताजी खिलौने लेकर आये तो राधिका अपना खिलौना लेकर शीघ्रता से अपनी माँ की ओर बढ़ी नन्ही सी राधिका के मन मे कोई सवाल था जो दिमाग मे गुदगुदी कर रहा था, उसने माँ की ओर बढ़ते हुए पूछा...

माँ, पिताजी हमेशा मेरे लिये गुड़िया और भाई के लिए कार क्यो लेकर आते है?

माँ ने उत्तर दिया लड़किया गुड़िया से ही खेलती है, न इसलिए।

राधिका ने पुनः प्रश्न किया ऐसा क्यो?

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसका उत्तर माँ के पास भी नही था, वह राधिका की ओर आश्चर्य से देखने लगी।

क्या यह प्रकरण समाज का अपने बच्चे के साथ कैसा व्यवहार करता है, यह उद्घाटित नही करता? जो की हमारी चर्चा का केन्द्र बिन्दु भी है, वस्तुतः किसी समाज की अन्तरात्मा उन मुल्यो का साझा संग्रह जिन्हे वह वर्षो से मानता आ रहा है, वे सभी मान्यताएँ पुर्वाग्रह कहावते परम्पराये मिलकर समाज की अन्तरात्मा का निमार्ण करती है।

यह अन्तरात्मा ही है जो उस समाज की अभिव्यक्ति करती है, यह भिन्न भिन्न हो सकती है, भारतीय समाज मे इसकी अभिव्यक्ति भिन्न रुप ले लेती है, आप पश्चिम समाज मे समाज की इस अभिव्यक्ति मे अलग भिन्नता पायेंगे, इसी प्रकार भारतीय समाज के भीतर भी आप भिन्न भिन्न वर्ग, समाज क्षेत्र मे इसकी अभिव्यक्ति भिन्न भिन्न पायेंगे जिस पर हम एक एक कर विचार कर सकते है।

VisionIAS

जैसा की प्रसिद्ध समाजशास्त्री एण्टिनो ग्राम्स्की ने इस क्षेत्र मे व्यापक अध्यन द्वारा दर्शाया है की समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चो के भीतर किस प्रकार आत्मसातीकरण होती है और उनके व्यवहार भविष्य की सम्भावनाओ को निर्धारित करती है,

यदि सर्वप्रथम यदि एक बालिका के जीवन पर प्रकाश डाले तो, भारतीय समाज की परिस्थितियो मे उसकी जीवन को संकट गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो सकता है, जहाँ PCPNTD कानूनो पश्चात भी लिंग चयनित गर्भपात समस्या बनी हुयी है, और यदि वह इन मुश्किलो को पार करके भी बाहर की दुनिया मे आ जाये तो अपने भाई की तुलना दोयम दर्जे का जीवन तो उसका इंतजार कर ही रहा होता है।

स्कूल मे भेदभाव सहती वह आगे बढ़े तो किशोर अवस्था मे शीघ्र विवाह की चुनौती है, जैसे विविध रिपोर्ट बताते है, यह समस्या अभी भी बनी हुयी है, यदि अब

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वह बाल विवाद से बच जाती है तो शिक्षा के अवसर ही सीमित है, वह ज्यादा कुछ कर नही सकती है, पितृसत्तात्मकता उसके जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती रहेगी।

इसी प्रकार अब यदि एक बालक शिशु के रूप मे जीवन की कल्पना करे तो जन्म के साथ ही विविध आशाएँ बच्चो मे बांध दी जाती है, स्कूल की बोझिल डण्डा मार पढाई उसके खेल कूद के दिन को भी समाप्त कर देती है, अब थोड़े बडे होने पर ही मर्द को दर्द नही होता की सो कोल्ड अवधारणा उसके मन मे बिठा दी जाती है, जिसका परिणाम हम किशोरो मे बढती आत्महत्याओ, कोटा फैक्ट्री वेब सीरिज मे देख सकते है।

और अब यदि तीसरे पक्ष की चर्चा करे अर्थात एक ट्रांस बालक अथवा बालिका तो उसके लिए अपने जीवन मे संघर्ष पैदा होते ही मान लिया जाता है, लक्ष्मी कंचना जैसी

VisionIAS

फिल्मे समाज की इसी सच्चाई को प्रगट करती है, की किस तरह ट्रासजेण्डर बालक बालिका समाज मे कुरीतियो का सामना करते है, अब वे चाहे वैश्वजीन कोटी कंचन चान्दे हो अथवा प्राचार्य मानवी बंधोपाध्याय।

अब यदि लिंग के आधार पर समाज का बच्चो से व्यवहार की चर्चा पश्चात अन्य आयामो पर बच्चो के साथ व्यवहार की चर्चा भी किया जाना अवश्यक है, जैसे एक आयाम अनाथ बच्चो के संदर्भ मे देखा जा सकता है जिन्हे एक अनजान वातावरण मे रहना होता है हाल ही मे एक अनाथालय मे सेक्स रैकेट का खुलासा किसी से छुपा नही है।

अब यदि ग्रामीण क्षेत्रो मे बालको की चर्चा करे तो जहाँ वह स्वयं को समाज मे ढल पाते है, उनके लिए पारम्परिक विभाजन एक आदर्श पुरुष, आदर्श महिला के रूप मे बड़ा होना अति आवश्यक है।

VisionIAS

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

तब वही शहरीपृष्ठभूमि मे बच्चो को अपने कामकाजी माता पिता के 1 घण्टे की प्राथमिकता प्राप्त हो जाये तो बड़ी बात है, जो अपने बच्चे को प्रतिस्पर्धा की मशीन व नम्बरो के गोदाम से ज्यादा नही समझते, अभी हाल ही मे एक 11वर्षीय बालक द्वारा अपने मातापिता से तलाक की खबर ने खूब सुर्खिया बटोरी।

अगर इसके साथ ही एक रोचक तथ्य पर विचार करे तो एनजीआरबी के आँकड़े बताते है, की भारत विश्व मे चाइल्ड पोर्न सामग्री देखने वाला शीर्ष देश है, जहाँ 1 वर्षीय बालिका को हम सुरक्षा मुहैय्या नही करा पा रहे है।

इसके साथ ही बालश्रम एक ऐसा मुद्दा है, जो आज भी आत्मा झकझोर देता है, धुल धुआं से भरी फैक्टरियो मे नन्ही सी जान को लगाया जाना, मानवाधिकार का घोर उल्लंघन है, अब तो आप सड़क चौराहो पर भीख मांगते बच्चो के पूरे व्यापारिक नेटवर्क को भी देख सकते है।

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इन नकारात्मक मुद्दों के साथ ही समाज में ऐसे कई सकारात्मक प्रयास भी बच्चों की ओर देखने को मिलते हैं, जो समाज की अवधारणा का वास्तविक स्वरूप प्रतीत होते हैं,

चाहे वह नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का बचपन बचाओ आन्दोलन है, जिसने दुनिया के समक्ष एक मिसाल कायम की अथवा अहमदाबाद के सिग्नल स्कूल जहाँ भीख मांगने वाले बच्चों के पुनर्वास के लिये व्यापक कार्य किया गया।

अथवा भारतीय संस्कृति की मान्यताएँ जहाँ कन्या को दुर्गा और किशोरी युवती को लक्ष्मी रूप में पूजा जाता है जिसके लिए "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

जैसी किवदन्तियाँ प्रचलित हैं, आप तेलंगाना के हरिपुरा का उदाहरण ले सकते हैं, जहाँ बेटियों के जन्म का उत्सव मनाया जाता

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अब यदि अपनी चर्चा को विस्तारित करे तो पश्चिम समाज की अभिव्यक्ति भी उनके बच्चो के प्रति चर्चा का विषय रहता ही है,

जहाँ स्वतन्त्रता, व्यक्तिवाद के मूल्य को अधिक प्राथमिकता दी जाती है, 16 वर्षीय बालक / बालिका अपने निर्णय स्वयं ले सकती है, निजता महत्वपूर्ण है, सामाजिक सम्बन्ध उसके बाद की प्राथमिकता है, बच्चे भविष्य में चुनाव के लिए अधिक स्वतन्त्र है लैंगिक विभाजन अपेक्षाकृत कम दिखायी देगा, सम्बन्धो मे अधिक व्यवहारिकता देखी जा सकती है।

परन्तु इसकी भी अपनी सीमाएँ है, जो समाज की अन्तरात्मा मे व्याप्त मूल्यो से देख सकते है जैसे एक ब्लैक के बच्चे से व्हाइट के बच्चे का अन्तर समाज द्वारा किया जाना, बच्चो के मध्य व्यक्तिवाद की अधिकता ने जहाँ मानसिक तनाव को बढ़ाया है, वही किशोरो मे मादक द्रव्य सेवन की प्रवृत्ति बढ़ायी है, उदाहरण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अमेरिका किशोरो मे गन फायर की घटनाएं कितनी चर्चा का विषय रही, यह छिपा हुआ मुद्दा नही है।

उसी प्रकार आप अफ्रीका के जनजातीय समाज मे बच्चो के सामाजीकरण व समाज से अन्तर परस्पर सम्बन्धो को देख सकते है, जिनमे कई जनजातियो मे श्रमविभाजन मे बालिकाएं अपनी माँ के साथ खेती करती है, तो पुरुष व बालक गृह कार्य का बीड़ा उठाते है जो अपने बच्चो के साथ भी उसी प्रकार का व्यवहार करते है, जैसी उनकी मान्यताएं है, जैसी समाज की अपेक्षा है।

यहाँ तक की अपनी चर्चा यह बताती है की कोई समाज जिन मान्यताओ को प्राथमिकता देता है, उसी अनुरूप वह अपने बच्चो के साथ भी व्यवहार करते है, परन्तु ऐसे भी उदाहरण है जहाँ बच्चो ने सामाजिक मानदण्डो को उलटते हुए अलग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उदाहरण प्रस्तुत किये हो जैसे मनु भाकर (ओलम्पिक विजेता (स्पोर्ट कल्चर को बढ़ावा दिया) जो प्रायः परम्परागत बालकों का क्षेत्र माना जाता है, उसी प्रकार ग्रेटा थनबर्ग जैसे उदाहरण जो जलवायु परिवर्तनों के विरुद्ध समाज की पारम्परिक मूल्य विरुद्ध आवाज उठाती है।

अब यदि विद्वान पार्सन्स की "समाजीकरण उण्डीशनिंग" सिद्धान्त की चर्चा की जाए तो अनुचित न होगा जिसमें विवरण मिलता है, किस प्रकार समाज की अन्तरात्मा विकास करती है, बच्चों के प्रति व्यवहार करती है, उन्ही के माध्यम से आगे बढ़ती है, जो दोनों मध्य परस्पर अन्तरनिर्भरता को बढ़ावा देती है।

चाहे वह पश्चिम का परिप्रेक्ष्य हो अथवा भारतीय संदर्भ यही दर्शाता है, की बच्चे समाज की अन्तरात्मा के उत्पाद भी है और परिवर्तक भी

VisionIAS

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसा की महात्मा गांधी द्वारा अपनी आत्मकथा "सत्य के साथ प्रयोग" मे भी लिखा है की बच्चे ही किसी समाज का भविष्य है, जिन्हे अच्छी परवरिश किसी देश के भविष्य का निर्धारक तत्व है,

अतः बच्चों के साथ व्यवहार

किसी समाज की अंतरात्मा का उचित विवरण अवश्य हो सकता है, व किसी भी समाज की प्रगति के लिए समाज का यह व्यवहार सदैव सकारात्मक ही होना चाहिए।

"बच्चों से खुशहाली है।
बच्चों से हरियाली है।
यही तो है, उजियारे कल के
जिनसे आती हर चेहरे पर लाली है।

VisionIAS